भारत की भौगोलिक विविधता

भारत एक विशाल और विविधतापूर्ण देश है। इसकी भौगोलिक संरचना में ऊँचे पर्वत, विशाल मैदान, पठार, मरुस्थल, समुद्री तट, द्वीप तथा अनेक प्रकार की नदियाँ और वन पाए जाते हैं। भारत का विस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में हिंद महासागर तक तथा पश्चिम में अरब सागर से पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक है। भौगोलिक परिस्थितियों में इस विविधता के कारण भारत में अलग-अलग प्रकार की जलवायु, मिट्टी, वनस्पति, कृषि और प्राकृतिक संसाधन पाए जाते हैं। यही भौगोलिक विविधता भारत की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता का भी एक महत्वपूर्ण आधार है।

1. भारत की स्थिति एवं विस्तार

भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत, दक्षिण में हिंद महासागर, पश्चिम में अरब सागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी है। भारत का क्षेत्रफल लगभग 32.87 लाख वर्ग किलोमीटर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा देश है। भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यहाँ उष्णकटिबंधीय से लेकर पर्वतीय जलवायु तक अनेक प्रकार की प्राकृतिक परिस्थितियाँ मिलती हैं। कर्क रेखा भारत के मध्य भाग से होकर गुजरती है, जिसके कारण देश के दक्षिणी भाग में सामान्यतः उष्ण जलवायु का प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

2. भारत के प्रमुख भौतिक प्रदेश

हिमालय पर्वतीय क्षेत्र

हिमालय भारत के उत्तर में स्थित है। हिमालय विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है। इसकी प्रमुख श्रेणियाँ हिमाद्री, हिमाचल और शिवालिक हैं। हिमालय भारत को मध्य एशिया की ठंडी हवाओं से बचाने में सहायता करता है। गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी महत्वपूर्ण नदियों का उद्गम हिमालयी क्षेत्र से होता है। यहाँ ऊँचे पर्वत, घाटियाँ, हिमनद और घने वन पाए जाते हैं।

उत्तरी विशाल मैदान

हिमालय से निकलने वाली नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ निक्षेपों से उत्तरी मैदानों का निर्माण हुआ है। गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों ने इस मैदान का निर्माण किया है। यहाँ की भूमि अत्यंत उपजाऊ है। इसलिए यह क्षेत्र भारत के प्रमुख कृषि क्षेत्रों में शामिल है। गेहूँ, चावल, गन्ना और दलहन जैसी फसलों का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है।

प्रायद्वीपीय पठार

प्रायद्वीपीय पठार भारत के दक्षिणी और मध्य भाग में फैला हुआ है। यह भारत के प्राचीन भू-भागों में से एक है। दक्कन का पठार, मालवा का पठार और छोटानागपुर का पठार इसके प्रमुख भाग हैं। इस क्षेत्र में कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइट और मैंगनीज जैसे खनिज संसाधन पाए जाते हैं। पठारी क्षेत्र की नदियों में नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी प्रमुख हैं।

भारतीय मरुस्थल

भारतीय मरुस्थल मुख्य रूप से राजस्थान के पश्चिमी भाग में स्थित है। इसे थार मरुस्थल कहा जाता है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है तथा तापमान में काफी अंतर पाया जाता है। रेतीली मिट्टी और रेत के टीलों के कारण यहाँ की प्राकृतिक परिस्थितियाँ देश के अन्य भागों से अलग हैं। ऊँट यहाँ के प्रमुख पशुओं में से एक है।

तटीय मैदान

तटीय मैदान भारत के पूर्वी और पश्चिमी समुद्री किनारों पर स्थित हैं। पश्चिमी तटीय मैदान अरब सागर के किनारे तथा पूर्वी तटीय मैदान बंगाल की खाड़ी के किनारे स्थित हैं। पूर्वी तट पर महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी नदियों द्वारा बनाए गए विस्तृत डेल्टा पाए जाते हैं। तटीय क्षेत्रों में मछली पालन, नारियल उत्पादन, समुद्री व्यापार और पर्यटन का विशेष महत्व है।

द्वीपीय क्षेत्र

द्वीपीय क्षेत्र भी भारत की भौगोलिक विविधता का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बंगाल की खाड़ी में अंडमान-निकोबार द्वीप समूह तथा अरब सागर में लक्षद्वीप स्थित है। अंडमान-निकोबार में घने उष्णकटिबंधीय वन पाए जाते हैं, जबकि लक्षद्वीप मुख्यतः प्रवाल द्वीपों से बना है।

3. जलवायु की विविधता

भारत की जलवायु मुख्यतः मानसूनी है, लेकिन देश के विभिन्न भागों में जलवायु की काफी भिन्नता दिखाई देती है। हिमालयी क्षेत्रों में सर्दी में अत्यधिक ठंड पड़ती है, जबकि राजस्थान में गर्मियों में तापमान बहुत अधिक हो सकता है। केरल और पश्चिमी तट के कुछ क्षेत्रों में वर्षा अधिक होती है, जबकि राजस्थान के पश्चिमी भाग में वर्षा बहुत कम होती है। भारतीय जलवायु में मानसून की महत्वपूर्ण भूमिका है। दक्षिण-पश्चिम मानसून भारत के अधिकांश भाग में वर्षा लाता है। कृषि, जल संसाधन और अर्थव्यवस्था काफी हद तक मानसूनी वर्षा पर निर्भर करती है।

4. मिट्टी एवं वनस्पति की विविधता

भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टी पाई जाती है। इनमें जलोढ़ मिट्टी, काली मिट्टी, लाल एवं पीली मिट्टी, लेटराइट मिट्टी और मरुस्थलीय मिट्टी प्रमुख हैं। जलोढ़ मिट्टी उत्तरी मैदानों में पाई जाती है और कृषि के लिए बहुत उपयोगी है। काली मिट्टी मुख्य रूप से दक्कन के पठार में मिलती है और कपास की खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती है। इसी प्रकार भारत में उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन, पर्णपाती वन, कांटेदार वन, पर्वतीय वन और मैंग्रोव वन पाए जाते हैं।

5. नदियों एवं जल संसाधनों की विविधता

भारत में अनेक बड़ी और छोटी नदियाँ हैं। इन्हें मुख्यतः हिमालयी नदियों और प्रायद्वीपीय नदियों में बाँटा जाता है। गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी हिमालयी नदियों में वर्षभर जल की उपलब्धता रहती है। दूसरी ओर नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी प्रायद्वीपीय नदियाँ मुख्यतः वर्षा पर निर्भर करती हैं। नदियाँ सिंचाई, पेयजल, जलविद्युत, मत्स्य पालन और परिवहन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनके कारण अनेक सभ्यताओं और नगरों का विकास भी हुआ है।

6. भौगोलिक विविधता का मानव जीवन पर प्रभाव

भारत की भौगोलिक विविधता का सीधा प्रभाव लोगों के जीवन पर पड़ता है। अलग-अलग क्षेत्रों में जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों के अनुसार कृषि, भोजन, वस्त्र, आवास और व्यवसाय में अंतर दिखाई देता है। पर्वतीय क्षेत्रों में बागवानी और पशुपालन महत्वपूर्ण है, जबकि मैदानों में कृषि का विशेष महत्व है। तटीय क्षेत्रों में मछली पालन और समुद्री व्यापार विकसित हुए हैं तथा खनिज-समृद्ध पठारी क्षेत्रों में खनन और उद्योगों का विकास हुआ है। भौगोलिक परिस्थितियों ने भारत में विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों और जीवन-शैलियों के विकास में भी योगदान दिया है॰

निष्कर्ष

भारत की भौगोलिक विविधता उसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। हिमालय, उत्तरी मैदान, पठार, मरुस्थल, तटीय क्षेत्र और द्वीप सभी मिलकर भारत की भौगोलिक संरचना को विशिष्ट बनाते हैं। जलवायु, मिट्टी, नदियों, वनस्पति और प्राकृतिक संसाधनों की विविधता ने यहाँ अलग-अलग प्रकार की कृषि, अर्थव्यवस्था और जीवन-शैलियों को जन्म दिया है। इसलिए भारत को समझने के लिए उसकी भौगोलिक विविधता को समझना अत्यंत आवश्यक है।